P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रौद्योगिकीय परिवर्तन का समकालीन भारतीय समाज पर प्रभाव – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

अमित मलिक
विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
डी.ए.वी. कालेज,
मुजफ्फरनगर

सारांश

संक्षेप में प्रौद्योगिकी के प्रभावस्वरुप भारतीय सामाजिक जीवन में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो ही प्रभाव क्रमशः स्पष्ट परिलक्षित हुए है। सकारात्मक रुप में प्रौद्योगिकी से भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि हो रही है तथा समाज के निम्न स्तर के लोग मुख्यधारा से जुडे रहे है साथ ही उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है जिसका प्रमुख लक्ष्य ज्ञान प्राप्त तथा सांस्कृतिक तत्वों का वैश्विकस्तर पर प्रसार होना है। वहीं नकारात्मक रुप मे सामुदायिकता में कमी आई है। समय का मूल्य बढ़ गया है, पारिवारिक नियन्त्रण तथा नैतिकता में ह्रास हुआ है। अवसाद तथा तनाव जैसी बीमारिया समाज में आम हो चली है। कुल मिलाकर प्रौद्योगिकी परिवर्तन के मिले–जुले परिणाम पटल पर आए है।

मुख्य शब्द : प्रौद्योगिकी विकास, भारतीय सामाजिक व्यवस्था।

प्रस्तावना

प्रौद्योगिकी के विकास के चलते भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन परिलक्षित हुआ है तथा भारतीय समाज अपने परम्परागत ढांचे से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा जिसका प्रतिबिम्ब परिवर्तन को मानसिक स्तर पर स्वीकार करना है। प्रौद्योगिकी की पहुॅच आज जनमानस तक हो गयी है। संस्कृति व ज्ञान का प्रसार प्रौद्योगिकी के माध्यम से लोगो में परोसा जा रहा है जिसने जाति व्यवस्था के कठोर पैमानो में शिथिलता ला दी है। जिसका परिणाम जाति व्यवस्था का घटता महत्व आर्थिक कारकों की सफलता के कारण जाति व्यवस्था का महत्व बढा है।

अध्ययन का उद्देश्य

अन्तरजातीय विवाह का बढ़ता चलन परिवार के अनेक कार्य दूसरी संस्थाओं द्वारा सम्पन्न कराना इसका उद्देश्य प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार ''प्रौद्योगिक प्रकृति के साथ मनुष्य के व्यवहार करने के प्रकार और उत्पादन की उस प्रक्रिया को प्रकट करती है। जिससे वह अपना जीवन पालता है और इस प्रकार सामाजिक सम्बन्धो के बनने के प्रकार तथा उनसे उत्पन्न होने वाले मानसिक सम्बन्धो के प्रकार को प्रकट करती है।'' इस प्रकार प्रौद्योगिकी यंत्र अथवा उपकरण से भिन्न है और इसको प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए बस का इन्जन एक यन्त्र है और इसको प्रयोग करने की प्रक्रिया एक प्रौद्योगिकी है। इस प्रकार मनुष्य प्रकृति से अपना व्यवहार एक पशु के समान सीधे–सीधे अथवा निश्चित रुप में न करके अपने ज्ञान और बुद्धिबल के सहारे उसके गुप्त भेदो का उपयोग करते हुए एक विशेष पद्धति से करता है। यही प्रौद्योगिकी है। इसी प्रौद्योगिकी के बल पर मनुष्य जमीन में अपने खाने–पीने की वस्तुए पैदा करता है। जैसे खनन से लोहा, तांबा सोना–चॉदी आदि वस्तुएँ पैदा करता है। वहीं ऊर्जा क्षेत्र की की आवश्यकताए पूरी करने के लिए खनिज तेलो, कोयला, पनबिजली आदि का प्रयोग करता है। कार्लमार्क्स के अनुसार सामाजिक सम्बन्ध और मानसिक धारणाओं का बनना तक इसी पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से भी भिन्न है क्योंकि वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हम सत्य तक पहुँचने का प्रयास करते है। वही दूसरी और प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का एक व्यावहारिक पक्ष है। इसमें मानव आदर्शो और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर साधनों को विकसित किया जाता है।

इस प्रकार प्रौद्योगिकी मनुष्य का प्रकृति से व्यवहार करने का एक साधन मात्र है। इन साधनों पर पूंजीवादी देशों में पूंजीपतियों का और साम्यवादी देशों में राज्य का अधिकार रहता है। प्रौद्योगिकी पर अधिकार रहने में ही आर्थिक

हित सुरक्षित रह सकते है इस प्रकार प्रौद्योगिकी आर्थिक उत्पादन के लक्ष्यों का प्राप्त करने का साधन है।

इस प्रकार की प्रौद्योगिकी का बराबर विकास हो रहा है और इसके विकास के साथ–साथ समाज का ढांचा भी बदल जाता है। उदाहरण के लिए प्रौद्योगिकी के सतत् विकास से श्रम–विभाजन तथा विशेषीकरण बढता जाता है। जिससे समाज में प्रत्येक विषय के विशेषज्ञ दिखायी देते है। मानव सभ्यता के विकास में प्रौद्योगिकी के विकास का एक बड़ा हाथ रहा है। आज जो सुख–सुविधायें हमारे पास है। जिनमें यातायात तथा सन्देश वाहन के साधन भी है। जैसे–डाक, तार, टेलीफोन, रेल, बस, कार, हवाईजहाज, मोटरसाइकिल खेती–बाड़ी करने के यन्त्र तथा जीवन में प्रयोग की जाने वाली अन्य उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने की जो हजारो मशीने दिखायी देती है। वे सब प्रौद्योगिकी के विकास का ही एक उदाहरण है। प्रौद्योगिकी में उद्योगो में मशीनों के प्रभाव का मानव के सामाजिक जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा है। मशीनों के उपयोग का सबसे बड़ा प्रभाव व्यक्तिगत उत्पादन के स्थान पर कारखाना पद्धति का उद्य है। कारखाना पद्धति में हजारों लोग एक साथ काम करते है और प्रत्येक कार्य–यन्त्रवत होता है। भारत वर्ष में पहले जुलाई लोग अपने घरो में हथकरघो से कपड़ा बुनते थे। किसानों के यहॉ गन्ने से गुड़ बनाया जाता था लेकिन आज देश में कपड़े तथा चीनी की हजारों मिले है। जिनमें हजारों मजदूर काम करते है।

प्रौद्योगिकी तथा बड़े–बड़े कारखानों के उदय से नगरीकरण का विकास हुआ। गांव से आने वाले हजारो श्रमिक कारखानों के आस–पास रहने लगे फिर भौतिक आवश्यकताओं की पूति के लिए दुकान खुली। फिर बाजार बने, स्कूल बने, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अस्पताल बने, व्यापारिक कम्पनिया बनी और इस प्रकार कारखानों के आसपास बड़े–बड़े नगर बस गये। नगरीकरण और औद्योगिकरण से सामाजिक ढांचा बदल गया। सामाजिक संगठन वर्गो में बदल गया जिनमें परस्पर प्रतिद्वन्दिता दिखायी देने लगी। पूंजीपति और श्रमिको में रोज नये झगड़े बढने लगे। इन सब कारणों से नवीन विचार धाराओं का जन्म हुआ। भारत में साम्यवादी आन्दोलन अधिकतर प्रौद्योगिकी नगरो में ही दिखायी पड़ता है। मशीनों के प्रयोग से परिवार में स्त्रियों में काम का बोझ हलका हो गया। मशीनों के प्रयोग से बड़े पैमाने पर व्यापार का विकास हुआ। जिससे दूर–दूर व्यापारियों से बात करने की आवश्यकता महसूस होने लगी। इस दिशा में डाक, टेलीफोन, मोबाइल फोन आदि से बड़ा लाभ हुआ। समाचार पत्रो, रेडियों आदि की सहायता से विज्ञापनों का कार्य शुरु हुआ। सन्देश वाहन के साधनों के साथ–आवागमन के साधनों का भी आश्यर्चजनक विकास हुआ और 500 मील की स्पीड से उड़ने वाले जेट वायुयानों से लोग कुछ ही घण्टो में एक देश से दूसरे देश में पहुॅचने लगे। विभिन्न देशो के लोगो के परस्पर मिलने–जुलने से उनमें आपस में भेदभाव दूर होने लगे और घृणा तथा द्वेष का स्थान सहानुभूति और सहयोग ने ले लिया। विभिन्न जातियों और प्रजातियों में सहिष्णुता बढने लगी।

प्रौद्योगिकी विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक खेती की नवीन प्रविधियों का विकास ही खेती करने के नये–नये यन्त्रों का आविष्कार हुआ। इन सब बातों से खेती में कम परिश्रम से अधिक उत्पादन होने लगा।

आर्थिक सीमाओं के विस्तार, राज्यों के क्षेत्र के विस्तारनये वर्गो के निर्माण, लोकतन्त्र के विकास, फैशन के प्रकार, नगरीकरण, औद्योगिकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, भूमण्डलीकरण –जैसे नयी विचारधाराओं के फैलने तथा नयी समितियों के निर्माण से मनुष्यों के विश्वासों, प्रवृतियों तथा विचारों पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। इससे सामाजिक मुद्दो में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है। पुराने मुद्दे बिल्कुल बदल गये है। धन को समाज में सर्वोच्च स्थान दिया जाने लगा है। व्यक्ति की परिस्थिति धन के आधार पर तय होने लगी है। भारतीय जाति व्यवस्था में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे है। जातीय संस्तरण में जो स्थान पहले ब्राहमणों को दिया गया था। उसमें बदलाव देखे जाने लगे है। जो आदर, सम्मान ब्राहमणों का समाज में हुआ करता था उसमें परिवर्तन हुआ है। जातीय संस्तरण में जो आधार क्षत्रियों तथा वैश्यों का था उसमें भी परिवर्तन होने लगा है। अब समाज में कृषकों तथा पूंजीपतियों ने क्षत्रियों का स्थान ग्रहण नही रह गया है। भ्रष्टाचार को धीरे–2 समाज द्वारा स्वीकृति दिया जा रहा है। धर्म को भी अब सामाजिक संस्था नही माना जा रहा है। अब धर्म को एक निजी मामला बताया जा रहा है।

सामाजिक सम्बन्धों में अब धर्मनिरपेक्षता पर जोर दिया जाने लगा है। आध्यात्मिकता के स्थान पर बाहरी तड़क–भडक को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। दिखावट और बनावट के समने संस्कृति के मौलिक तत्वो की अवहेलना होने लगी है। मानवीय सम्बन्ध निवेयक्तिक और दैतियक होते जा रहे है। मनुष्य अब एक यन्त्र के रुप में दिखायी देने लगा है। एक निश्चित समय पर उसे उठना है। एक निश्चित समय पर सोना है। निश्चित समय पर काम के लिए ऑफिस, कारखाना या अन्य किसी स्थान पर जाना है। यन्त्र की तरह कार्य करना है ताकि फिर शाम को घर आना है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की एक निश्चित दिनचर्या बन गयी है। व्यक्ति चाहकर भी इस इस दिनचर्या से बाहर नही आ पाता है और लगातार यत्रवत कार्य करते–करते धीरे–धीरे व्यक्ति को अपने कार्यो से ही लगाव होने लगता है तथा कुछ समय बाद व्यक्ति मानसिक रोगी बन जाता है। व्यक्ति में कार्य करते हुए गति तो दिखायी पड़ती है परन्तु संवेदन शीलता नही, स्पन्दन होता है परन्तु भावना नही, होता है। परन्तु अनुभूतियां नही। सभी आर्थिक दौड में दोड रहे है। सभी को लगता है कि इस आर्थिक दौड रुपी प्रतिस्पर्धा में ही जीतूगा। इस दौड में किसी को किसी की ओर देखने की फुर्सत भी नही है। सामाजिक मूल्यों में आ रहे इस बदलाव का एरिक फार्म में अपनी पुस्तम "The Same Society" में बडा अच्छा वर्णन किया है और ग्रीन ने ठीक ही लिखा है कि प्रौद्योगिक परिवर्तन से सामाजिक मूल्यों और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन होता है।

प्रौद्योगिकी में आ रहे बदलावो का प्रभाव सामाजिक संस्थाओं पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। परिवार नामक सामाजिक संस्था जिसे समाज की सबसे छोटी इकाई के रुप में भी परिभाषित किया जाता है। उसमें परिवर्तन देखे जा रहे है तथा परिवार का कार्य अब अधिक दूसरी समितियॉ भी करने लगी है। परिवार के बहुत से कार्य भी मशीनो से होने लगे है। जिससे परिवार की महिलाओं को अवकाश मिलने लगा है। तथा इस समय का उपयोग महिलाये दूसरी कार्यो को करने में लगाती है। पारिवारिक नियन्त्रण परिवार के सदस्यों के ऊपर से कम होने लगा है। पारिवारिक विघटन की प्रक्रिया में तीनो देखी जा रही है क्योंकि हिन्दुओं में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जा रहा है। जिसकी परिभाषा अब बदल गयी है तथा उनमें भी विवाह अब एक सामाजिक समझौता बनता जा रहा है। जिसको किसी भी समय तोड़ा जा सकता है। विवाह में जातीय बन्धन भी ढीले पड़ रहे है। जिससे जीवन साथी के चुनाव का क्षेत्र लगातार बढ़ता जा रहा है। वही तलाको की संख्या भी बढ़ रही है। धार्मिक संस्थाओं के बन्धन भी कमजोर पड़ रहे है। राज्यों ने धर्म का समर्थन बन्द कर दिया है। क्योंकि राज्य धर्मनिरपेक्ष बन रहे है। प्रौद्योगिकी के कारण नये नगरीय मूल्यों का जन्म हो रहा है और ये नगरीय मूल्य केवल नगरो में ही पनप रहे है। बल्कि इन्होने अपनी पेठ ग्रामीण क्षेत्रो मे भी बना ली है। जिससे परम्परागत ग्रामीण मूल्यों का ह्रास होने लगा है। इन नगरीय तथ्यो में कुछ चीजे स्पष्टतः देखी जा सकती है। जैसे सामुदायिकता की कमी, समय का मूल्य बढ जाना, बीमारियों की संख्या में वृद्धि, पारिवारिक नियन्त्रण का प्रभाव, नैतिकता का निम्नस्तर, स्त्री–पुरुषों की संख्या में विषमता, अपराधो की संख्या में वृद्धि, सामाजिक विघटन में वृद्धि। दूसरी ओर प्रौद्योगिकी से भौतिक सुख–सुविधाओं में वृद्धि हो रही है तथा समाज के निम्न स्तर के लोगो के आत्मविश्वास में वृद्धि भी हो रही है। ज्ञान और सांस्कृतिक तत्वों के प्रसार के रुप में प्रौद्योगिकी के अच्छे प्रभाव भी दिखायी पड़ रहे है। मोदी सरकार ने प्रौद्योगिकी को बढावा देने के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना जैसी महत्वकांक्षी योजना का प्रारम्भ किया हुआ है ताकि भारत की विशाल युवा शक्ति को प्रौद्योगिकी के प्रयोग में पारंगत बनाया जा सके और इसके प्रभाव भी समाज में स्पष्ट देखे जाने लगे है। इस तरह हम कह सकते है कि इस वर्णात्मक शोध प्रपत्र के माध्यम से समकालीन समाज पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव को स्पष्टतः देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Singh J.P. 1985: Patten of Rural Urban migration in India. P.H.I. publication New Delhi-110001*
2. *Raj Gopal P.R.1987: "Social change and violence. The Indian experience" Centre for policy research, uppal publishing house New Delhi, India.*
3. *Aggarwal, Dr G.K. 2018: Sociology India, SBPD publication.*
4. *Aulette, J.R. 1994: Chaging families " Belment CA: wedsworth publishing company.*
5. *Singer, Milton 1992: A great tradition modernizes, Delhi, vikas publishing house.*
6. *Singh J.P. 2003: Sociology: Concept and theories. P.H.I. publication New Delhi-110001.*